हिन्दी फिल्मों के

कुछ घिसे-घिसाए डायलॉग...

मिहिर, सुनील मिश्र, अजीत सिंह

क्या तुम्हें फिल्में देखने का शौक है? है तो अपने पसन्दीदा पाँच डायलॉग बताओ! क्या बातचीत के दौरान तुमने इनमें से किसी का इस्तेमाल किया है?

डायलॉग क्या कमाल की चीज़ होती है। शब्दों की ज़रा-सी उठापटक से एकदम मामूली-सी बात जादुई हो जाती है। और कई बार तो कहने का अन्दाज़ ही एक आम-सी बात को दिलचस्प बना देता है। जैसे, शोले के डायलॉग ("कितने आदमी थे?", "तीन सरदार।" आदि)। कई अभिनेता अपनी खास संवाद अदायगी की वजह से खूब लोकप्रिय हुए हैं। ऐसे ही दो अभिनेता थे राजकुमार और अजीत। "सारा शहर मुझे लायन के नाम से जानता है।" – फिल्म *कालीचरण* में अजीत का यह डायलॉग और फिल्म *वक्त* में राजकुमार ने जिस अन्दाज़ से बोला कि "चिनॉय सेठ, शीशे के घरों में रहने वाले दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकते।" उसे लोग आज तक नहीं भूले हैं। कई बार एक मामूली-से संवाद में गहरा अर्थ छुपा रहता है। और कभी हँसी-मज़ाक के चार शब्द लोगों की जुबान पर चढ़ जाते हैं। जैसे, शोले में असरानी का बार-बार कहना "हम अँग्रेज़ों के ज़माने के जेलर हैं।"

डायलॉग वही पर मूड अलग

"बाबू मोशाय! ज़िन्दगी और मौत तो ऊपरवाले के हाथ में है। जहाँपनाह, उसे ना तो आप बदल सकते हैं न मैं। हम सब तो रंगमंच की कठपुतलियाँ हैं जिनकी डोर ऊपरवाले के हाथों में बँधी है। कब, कौन, कैसे उठेगा यह कोई नहीं बता सकता है। हा हा हा हा हा हा . . !" फिल्म *आनन्द* में यह संवाद तीन बार आता है। पहली दो बार दर्शकों को हँसाता है और तीसरी बार आनन्द की मौत के ठीक बाद यह संवाद एक बिल्कुल नया और मार्मिक रूप ले लेता है। डायलॉग वही पर अर्थ अलग, मूड अलग।

अगर तुम याद कर पाओ तो बताओ कि *रंग दे बसंती* फिल्म के नायक करण का पहला संवाद क्या था? वो संवाद था "नौटंकी साला!" और मौत से ठीक पहले करण का आखिरी संवाद भी यही था.. "नौटंकी साला!" दोनों बार यह संवाद डी.जे. (आमिर खान) के लिए कहा गया था। बस अन्तर यह था कि मौत से ठीक पहले डी.जे. का मज़ाक सबकी आँखों में आँसू भर देता है। एक ही संवाद कभी हँसाता है, कभी रुलाता है। यानी संवादों का अर्थ हमेशा शब्दों के भीतर नहीं होता। परिस्थितियाँ और उसे ज़ाहिर करने की तकनीकें संवादों का असल अर्थ रचती हैं।

डॉक्टर के आने पर

- "अरे! इन्हें तो तेज़ बुखार है।"
- "ऑपरेशन करना होगा, पचास हज़ार रुपए लगेंगे।"
- "घबराने की कोई बात नहीं। मैंने इंजेक्शन दे दिया है, थोड़ी देर में इन्हें होश आ जाएगा।"
- "बधाई हो! आप बाप बनने वाले हो!"
- "अब सब कुछ ऊपरवाले के हाथ में है।"
- और सबसे मशहूर – "अब इन्हें दवा की नहीं दुआ की ज़रूरत है।"

पुलिसवालों के संवाद

(ये संवाद इंस्पेक्टर की भूमिका में अमर हो गए महान अदाकार - इफ्तेखार - को समर्पित हैं।)

- "कानून से मत खेलो।"
- "कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं।"
- "इंस्पेक्टर साहब, गिरफ्तार कर लीजिए इन्हें।"
- "पुलिस ने तुम्हें चारों तरफ से घेर लिया है। तुम्हारी बेहतरी इसी में है कि चुपचाप अपने आप को कानून के हवाले कर दो।"

नायिका

- "राजू, चलो न कहीं भाग चलते हैं। इस ज़ालिम दुनिया से दूर जहाँ हमें पहचानने वाला कोई ना हो।"
- "खबरदार, अगर मुझे हाथ भी लगाया तो मैं अपनी जान दे दूँगी।"
- "मैं तुम्हारे बच्चे की माँ बनने वाली हूँ।"
- "ड्राइवर, गाड़ी रोको।"

डायलॉग

कुछ मशहूर डायलॉग...

- "पहले उस आदमी का साइन लेकर आओ, जिसने मेरे हाथ पर यह लिख दिया था कि मेरा बाप चोर है।"
- "मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, नौकर हैं, चाकर हैं। तुम्हारे पास क्या है?"
  "मेरे पास माँ है।" (दोनों डायलॉग फिल्म *दीवार,* अमिताभ बच्चन और शशि कपूर)
- "यहाँ से पचास-पचास कोस दूर गाँव में बच्चा जब रात को रोता है, तो माँ कहती है, बेटा सो जा नहीं तो गब्बर आ जाएगा।"
- "अरे ओ सांभा! कितना ईनाम रखे है सरकार हम पर?"
- "तेरा क्या होगा रे कालिया?" (तीनों डायलॉग फिल्म *शोले,* अमजद खान)
- "ताज़ उनके करीब नहीं होता, जिनके सिर पर खौफ होता है।"
- "अनारकली, सलीम तुम्हें मरने नहीं देगा और हम तुम्हें जीने नहीं देंगे।" (दोनों डायलॉग फिल्म *मुगले आज़म,* पृथ्वी राज कपूर)
- "तुम्हारा खून, खून और हमारा खून पानी?" (फिल्म *सिकन्दर* में सोहराब मोदी।)
- "मोगेम्बो खुश हुआ।" (फिल्म *मिस्टर इंडिया* में अमरीश पुरी)
- "डांग कभी रांग नहीं होता।" (फिल्म *तहलका* में अमरीश पुरी)
- "मर्द को दर्द नहीं होता। (फिल्म *मर्द* में अमिताभ बच्चन)
- "हम जहाँ खड़े होते हैं, लाइन वहीं से शुरू होती है।" (फिल्म *कालिया* में अमिताभ बच्चन)
- "आत्मा की शान्ति में नफा-नुस्कान नहीं देखते।" (फिल्म *ब्लू अम्ब्रेला* में पंकज कपूर)
- "अगर किसी चीज़ को दिल से चाहो तो पूरी कायनात ...." (फिल्म *ओम शान्ति ओम* में शाहरुख खान)
- "आपके पाँव बहुत खूबसूरत हैं। इन्हें ज़मीन पे ना रखिएगा, मैले हो जाएँगे।" (फिल्म *पाकीज़ा* में राजकुमार)
- "जली को आग कहते हैं, बुझी को राख कहते हैं, उस राख से बनी बारूद को विश्वनाथ कहते हैं।" (फिल्म *विश्वनाथ* में शत्रुघ्न सिन्हा)
- "डॉन को पकड़ना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।" (फिल्म *डॉन* में अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान)
- "पोंछ दो इन्हें, पुष्पा। I hate tears।" (फिल्म *अमर प्रेम* में राजेश खन्ना)
- "बाबूजी ने कहा गाँव छोड़ दो, सबने कहा पारो को छोड़ दो, पारो ने कहा शराब छोड़ दो, माँ ने कहा हवेली छोड़ दो, एक दिन आएगा जब वो कहेंगे दुनिया ही छोड़ दो..."
- "कौन कमबख्त बरदाश्त करने के लिए पीता है..." (दोनों डायलॉग फिल्म *देवदास,* दिलीप कुमार)

चित्रः अतनु राय

● "छोड़ दो मुझे, भगवान के लिए मुझे छोड़ दो।"

नायक

● "मीना, पिताजी के पैर छुओ। पिताजी आशिर्वाद दीजिए। यह आपके घर की बहू है।"

● "कुत्ते, कमीने, मैं तेरा खून पी जाऊँगा।" (सबसे ज़्यादा धर्मेन्द्र द्वारा इस्तेमाल किया गया)

● "मैं तुम्हारा यह अहसान कैसे चुकाऊँगा।" (गरीब साथी या दोस्त पर हीरो का अहसान)

● "हम गरीब ज़रूर हैं लेकिन बेइमान नहीं।" (हीरो का स्वाभिमान)

● "मैंने तुम्हें क्या समझा था और तुम क्या निकले।"

● "बताओ, हीरे कहाँ हैं?" (आखिर सारी लड़ाई पैसे की ही तो है!)

जज

● "ताज़िरात-ए-हिन्द, दफा तीन सौ दो के तहत मुलज़िम को फाँसी की सज़ा दी जाती है ...to be hang by the neck till death."